पशुओं व मनुष्यों में क्षय रोग

कुल भूषण नागल एवं अतुल गुप्ता
पशु जनस्वास्थ्य एवं जानपदिक रोग विभाग, चौ०स०कु०हि०प्र०कृ. वि., पालमपुर

क्षयरोग, पशुओं व मनुष्यों में जीवाणुओं द्वारा फैलने वाला एक भंयकर,-संक्रामक, पशुजन्य (Zoonotic) रोग है। यह रोग पूरे भारतवर्ष या यूँ कहें कि पूरे विश्व में व्यापक रूप से फैला हुआ है। क्षय रोग, भारत में मनुष्यों की मृत्यु के प्रमुख कारणों में से एक है। इस रोग की व्यापकता इतनी है कि प्रत्येक मिनट में दो व्यक्ति क्षय रोग के कारण मरते हैं जिनकी प्रतिवर्ष संख्या लगभग 20 लाख है।

कारण :

यह रोग पशुओं में मुख्यतः माइकोबैक्टीरियम बोविस तथा मनुष्यों में माइकोबैक्टीरियम टयूबरक्युलोसिस नामक जीवाणुओं द्वारा होता है। क्षय रोग के जीवाणु आमतौर पर अपने आश्रयदाता प्राणी के शरीर में ही पाए जाते हैं परन्तु यह जीवाणु एक प्रजाति से दूसरे में भी आ जा सकते हैं इसलिए क्षय रोग का जीवाणु जनित पशुजन्य रोगों की सूचि में एक अहम् स्थान रखता है।

रोग का संचरण/फैलना :

इस रोग के जीवाणु थूक, लार, कफ, बलगम, मल-मूत्र, दूध तथा सांस के द्वारा वातावरण को दूषित करते हैं। उपरोक्त संक्रमित तत्वों के सम्पर्क में आने से मनुष्यों तथा पशुओं के बीच यह रोग फैलता है।

मनुष्यों में यह रोग आमतौर पर बीमार पशु के सीधे सम्पर्क या संक्रमित दूध व मांस आदि के सेवन से होता है।

लक्षण :

पशुओं में : जिन पशुओं में कमजोरी के कारण रोगप्रतिरोधक क्षमता कम हो उनमें यह रोग ज्यादा भयानक रूप धारण करता है। प्रभावित पशुओं को यह रोग लम्बे समय तक ग्रसित करता है। यह रोग शरीर के लगभग सभी तंत्रों को प्रभावित करता है तथा प्रभावित अंगों के हिसाब से अलग-अलग लक्षण उत्पन्न होते हैं। पशु में कमजोरी, बुखार, भूख न लगना, शारीरिक भार में लगातार कमी, जोड़ों में सूजन, सांस लेने में कठिनाई तथा फेफड़ों व पसलियों में गांठों के कारण खांसी इस रोग के प्रमुख लक्षण हैं। माँसपेशियों की क्षति के कारण पशु हडियों का ढांचा मात्र रह जाता है।

मादा पशुओं में गर्भाशय के प्रभावित होने पर, प्रसव संबन्धी समस्याएं पैदा हो सकती हैं। थनों व अयन के प्रभावित होने की स्थिति में उनमें सूजन एवं गांठें बन जाती हैं जिसके कारण यह जीवाणु दूध द्वारा अन्य प्राणियों में रोग का कारण बनते हैं।

अगर जीवाणु मस्तिष्क में प्रवेश कर जाएं तो पशु में लड़खड़ाहट या पक्षाघात (Paralysis) हो सकता हैं।

मनुष्यों में लक्षण :

लगभग 85 प्रतिशत रोगी व्यक्तियों में यह रोग विशेषकर फेफड़ों को प्रभावित करता है तथा शेष 15 प्रतिशत में यह रोग मस्तिष्क, आंत, गुर्दे, लिम्फ ग्रन्थियों, हड्डी, रीढ़ व जोड़ों इत्यादि को प्रभावित करता है। जिन मनुष्यों में रोगप्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है (जैसे कि AIDS/ एच.आई.वी. इत्यादि) उनमें यह सबसे आम अवसरवादी संक्रमण है।

मनुष्यों में इस रोग के मुख्यः लक्षण, तीन सप्ताह से अधिक/ज्यादा खांसी, बुखार विशेषकर शाम को बढ़ने वाला बुखार, छाती में दर्द, वजन का घटना, भूख न लगना तथा बलगम के साथ खून का आना इत्यादि हैं।

रोग का निदान :

पशुओं में :

- लक्षणें के आधार पर।
- दूध, गोबर, मूत्र तथा मुँह व नाक के स्रावों आदि की प्रयोगशाला में जांच द्वारा।
- टयूबरक्यूलिन टैस्टिंग (Tuberculin Testing) द्वारा: यह पशुओं में रोग के निदान का सबसे शीघ्र, सरल एवं सस्ता तरीका है जोकि किसी अनुभवी पशुचिकित्सक द्वारा ही किया जा सकता है।

मनुष्यों में :

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, भारत सरकार के अनुसार क्षय रोग/टी०वी० के निदान का सबसे कारगर एवं विश्वसनीय तरीका सूक्ष्मदर्शी यंत्र (Microscope) के द्वारा बलगम की जाँच करना है। सरकारी अस्पतालों/प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों में बलगम की निःशुल्क जांच की जाती है।

नियन्त्रण एवं रोकथाम :

पशुओं में :

- भारत सरकार के दिशा निर्देशानुसार जिन पशुओं में टयूबरकूलीन टैस्ट द्वारा रोग की पुष्टि होती है, उनका पालन पोषण स्वस्थ पशुओं से अलग रख कर किया जाना चाहिए।
- मृत पशु को वैज्ञानिक ढंग से जला अथवा गहरे गढ्ढे में गाड़ देना चाहिए।
- नए पशु खरीदने से पहले उनकी जाँच करवाना लाभप्रद है।
- पशुओं के लिए आरामदायक प्रवास का उचित प्रबंध होना

चाहिए।

- पशुओं मे उपचार लाभकारी नहीं है क्योंकि महंगी दवाईयां लम्बे समय तक देनी पड़ती है।
- पशुओं में क्षय रोग की रोकथाम हेतू टीकाकरण के परिणाम हितकारी नहीं हैं।

मनुष्यों में :

- मनुष्यों को पौष्टिक आहार लेना चाहिए व रोगग्रस्त पशु के दूध का सेवन नहीं करना चाहिए।
- सावधानी के लिए दूध को अच्छी तरह उबाल कर ही पिएं।
- फेफड़ों को स्वस्थ रखने के लिए खुले स्थान पर भ्रमण करना हितकार साबित होता है।
- क्षय रोग से प्रभावित व्यक्ति पशु प्रबंधन में भागीदारी न दें।
- बच्चों को जन्म से एक माह के भीतर BCG का टीका लगवाना चाहिए।
- मनुष्यों में डॉटस पद्वति (DOTS) द्वारा 6-8 माह की अवधि में ईलाज संभव है। आइसोनियाजिड, इथमब्यूटाल, स्ट्रेप्टोमाइसिन एवं रीफाम्पीसिन जैसी प्रभावशाली औषधियों के उपयोग से टी०वी० का रोग ठीक हो सकता है। परन्तु सामान्यतः रोगी पूर्ण अवधि तक नियमित दवा का सेवन नहीं करता है इसलिए सीधी देख-देख के द्वारा कम अवधि चिकित्सा (DOTS) क्षय रोग से पूरी तरह मुक्ति सुनिश्चित करने का मनुष्यों में सबसे प्रभावशाली तरीका है। नियमित तथा पूर्ण अवधि तक उपचार लेने से ही टी०वी० से मुक्ति मिलती है।

टी० बी० (क्षय रोग)

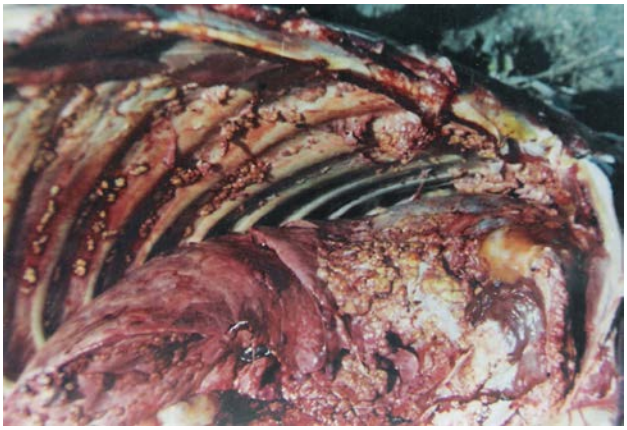

फेफड़ों व पस्लियों पर गांठें

क्षय रोग से ग्रस्त गाय

टयूबरकुलिन टेस्ट द्वारा क्षय रोग का निदान